Dr. Sangita Kumari Saha
B.A D - (2) (H) V th paper

Cumulative Frequency Curve

आवृत्ति वितरण को आलेख द्वारा दिखलाने का संचयी आवृत्ति वक्र प्रमुख तरीका है। यह वक्र संचयी आवृत्ति वितरण के आधार पर बनाया जाता है। संचयी आवृत्ति वितरण वह वितरण है जो यह दिखलाता है कि किसी वर्गान्तर की exact upper limit के नीचे कितने cases आ रहे हैं। संचयी आवृत्ति वितरण बनाने के लिए आंकड़ों को एक आवृत्ति में पहले व्यवस्थित कर लिया जाता है। इसके बाद cumulative को बनाया जाता है। किसी दिए गए वर्गान्तर की आवृत्ति में उसके नीचे वर्गान्तर के आवृत्तियों को जोड़ा जाता है। संचयी आवृत्ति निकाला जाता है। यह प्रक्रिया वितरण के सबसे नीचे के वर्गान्तर में शुरू करके सबसे ऊपर वाले वर्गान्तर पर समाप्त किया जाता है।

Score.	Frequency	Cumi Frequency.
93.5 – 96.5	1	50
90.5 – 93.5	1	49
87.5 – 90.5	2	48
84.5 – 87.5	4	46
81.5 – 84.5	6	42
78.5 – 81.5	12	36
75.5 – 78.5	7	24
72.5 – 75.5	5	17
69.5 – 72.5	3	12
66.5 – 69.5	5	9
63.5 – 66.5	0	4
60.5 – 63.5	1	4
57.5 – 60.5	3	3
	N = 50	

Scanned with CamScanner

उदाहरण स्वरूप, सबसे नीचे का वर्गान्तर 57.5 - 60.5 है जिसकी आवृत्ति 3 है चूंकि इस वर्गान्तर के नीचे कोई दूसरा वर्गान्तर नहीं है अतः इसके आवृत्ति को ज्यों का त्यों संचयी आवृत्ति के कालम में लिख दिया जाता है। उसके ऊपर का वर्गान्तर 60.5 - 63.5 है जिसकी आवृत्ति 1 है इसलिये नीचे के वर्गान्तर की संचयी आवृत्ति में जोड़ा जाता है अतः इस वर्गान्तर (60.5 - 63.5) की संचयी आवृत्ति 4 की जाती है।

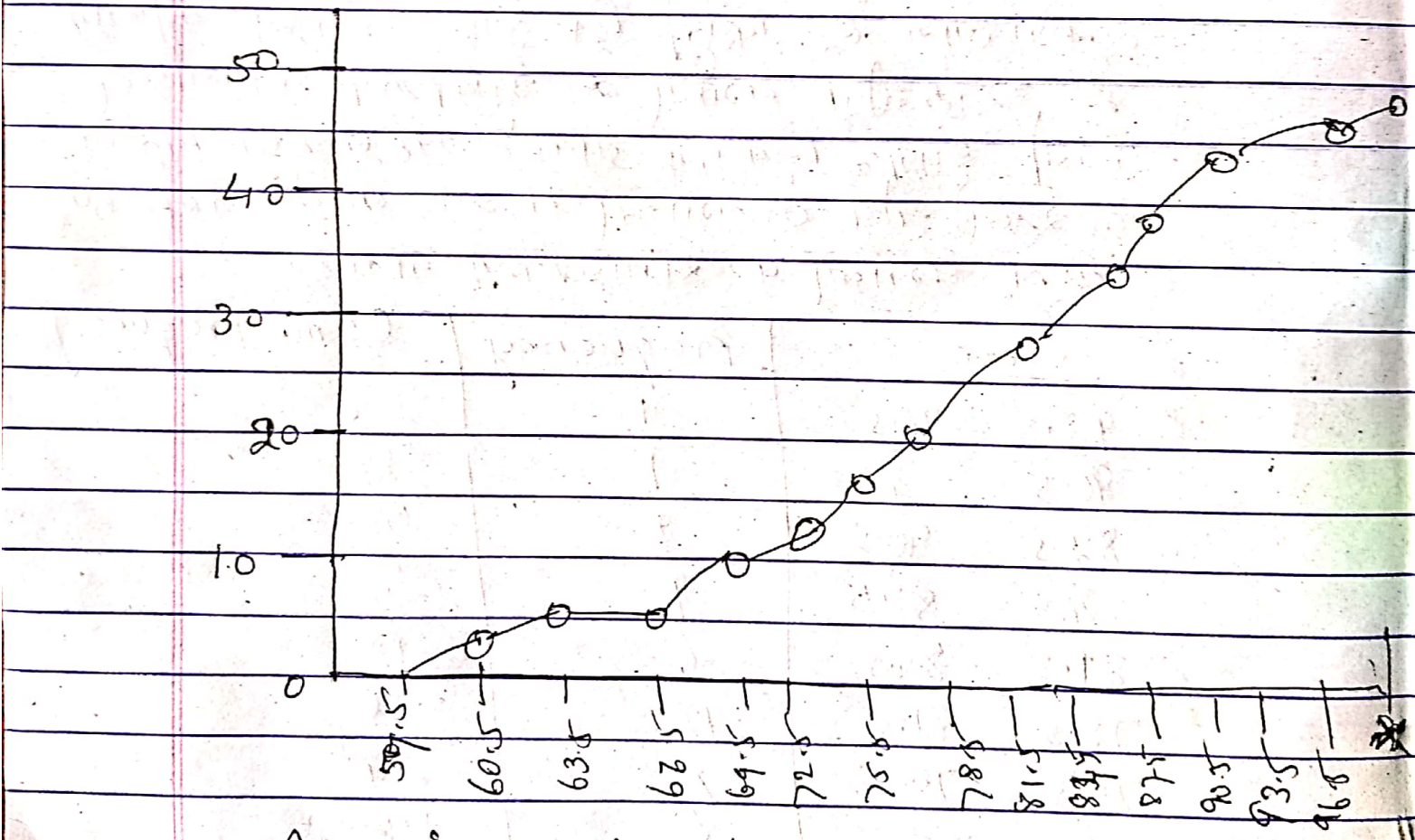

इसी तरह से ऊपर की सभी वर्गान्तरों की संचयी आवृत्ति ज्ञात की जाती है।

—o—